समाजशास्त्र

एक परिचय

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

समाजशास्त्र

एक परिचय

डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

समाजशास्त्र
एक परिचय

संस्करण : 2019

© लेखक

ISBN: 978-93-88998-62-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

विषय-सूची

	प्राक्कथन	*vii*
1.	समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा	1
2.	समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र तथा विषय-वस्तु	8
3.	समाजशास्त्र का वैज्ञानिक स्वरूप एवं अध्ययन की विधियां	16
4.	समाजशास्त्र एवं अन्य सामाजिक विज्ञान	32
5.	समाज की प्राथमिक अवधारणाएँ: विवाह, परिवार एवं धर्म	43
6.	सामाजिक परिस्थिति शास्त्र: ग्रामीण एवं नगरीय	73
7.	सामाजिक विभेदीकरण और स्तरीकरण	89
8.	समाजशास्त्र एवं संस्कृति	124
9.	समाजशास्त्र की प्रक्रिया : मूल्य एवं प्रथा	149
10.	सामाजिक संरचना में परिवर्तन	173
11.	राजनीति समाजशास्त्र	185
12.	सामाजिक वर्ग एवं व्यवस्था	241

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

समाजशास्त्र को एक ऐसे विज्ञान के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है जो समाज को इकाई मानकर समग्र रूप से इसका अध्ययन करता है।

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के संबंध में विद्वानों के विचारों को दो भागों में बांटा गया है-एक, स्वरूपात्मक सम्प्रदाय, जिसके समर्थक समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में देखते हैं और दूसरे समन्वयात्मक सम्प्रदाय जिसके समर्थक समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान के रूप में देखते हैं। स्वरूपात्मक सम्प्रदाय सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थकों में *जार्ज सिमेल, वॉन विज, मैक्स वेबर, टॉनीज* आदि हैं। इन विद्वानों की मान्यता है कि अन्य समाज विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान आदि की तरह समाजशास्त्र भी एक स्वतन्त्र या विशेष विज्ञान है।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु में सामाजिक सम्बन्ध के महत्व को देखते हुये *क्यूबर* ने इन्हें 'समाजशास्त्र की आधारशिला' कहा है। *क्यूबर* के अनुसार "समाजशास्त्र को मानवीय सम्बन्धों के व्यवस्थित ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" समाजशास्त्र मानवीय अन्तर्सम्बन्धों की विवेचना करता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि समाजशास्त्र में व्यक्ति का कोई महत्व नहीं है बल्कि समाजशास्त्र व्यक्ति का सामाजिक सम्बन्धों के एक अंग अथवा उनके परिणाम के रूप में अध्ययन करता है।

समाजशास्त्रीय अध्ययनों में अनुसंधानकर्ता के लिये सम्भव नहीं होता कि वह अपने अध्ययन-विषय से अपने को पूर्णतया पृथक् कर ले क्योंकि जिस विषय का वह अध्ययन कर रहा है, वह विषय उस सामाजिक प्रणाली का ही एक भाग होता है जिसका कि अध्ययनकर्ता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक अभिन्न अंग है। यदि वह मानवीय घटना उसके अपने समाज या समूह से संबंधित है तो उसके प्रति उसके दिल में 'विशेष' स्थान है और यदि वह ऐसे विषय का अध्ययन कर रहा है जो कि उसके अपने समाज या समूह का नहीं

है तो उस विषय के प्रति उसके दिल में कुछ न कुछ पक्षपात का होना ही स्वाभाविक है। दोनों में से किसी भी दशा में उसके लिए विषय से सम्पूर्ण अलगाव रखना संभव नहीं होता है।

एक ऐसा समाज जहां समाज के विभिन्न समूहों या किसी एक समूह के विभिन्न व्यक्तियों में पुरस्कारों एवं अवसरों का समान वितरण हो, सामाजिक समानता की स्थिति को दर्शाता है। ऐसे समाज में प्राकृतिक आधार पर असमानता या सामाजिक आधार पर भिन्नता दिखाई पड़ सकती है। परन्तु समाज इन विषमताओं के आधार पर व्यक्तियों या समूहों के बीच कोई ऊंच-नीच का क्रम तथा प्रतिष्ठा एवं अधिकारों के आधार किसी भी प्रकार का अंतर नहीं करता है। अर्थात् ऐसे समाज में व्यक्तियों या समूहों में जाति, प्रजाति, व्यवसाय, शिक्षा, राजनैतिक प्रभाव, आचरण आदि के आधार पर भिन्नता संभव है। परन्तु इन भिन्नताओं के कारण प्रतिष्ठा, अधिकार एवं अवसरों में किसी भी प्रकार का अंतर दिखाई नहीं पड़ता है।

सामाजिक स्तरीकरण एवं विभेदीकरण समान प्रतीत होने वाली अवधारणाएं है लेकिन दोनों में कुछ अंतर है। सभी समाजों में व्यक्तियों में लिंग, कद, आयु, प्रजाति, मानसिक क्षमता तथा मानव सावयव में पाई जाने वाली आंतरिक विशेषताओं के आधार पर विभिन्नताएं पाई जाती है। इन सावयविक भिन्नताओं के अतिरिक्त प्रत्येक समाज का सदस्य अर्जित सामाजिक विशेषताओं, जैसे-व्यवसाय, आय, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व, मूल्य, विश्वास तथा मनोभाव आदि के आधार पर एक-दूसरे से अलग-थलग किया जाता है। इन अर्जित तथा अनुवांशिक व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर निर्मित सामाजिक भूमिकाओं तथा कार्यों के विभाजन की प्रक्रिया को ही सामाजिक विभेदीकरण कहा जाता है। सामाजिक स्तरीकरण और विभेदीकरण के मध्य अंतरों को निम्नांकित बिन्दुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया जाता है।

इस पुस्तक का प्रकाशन विद्यार्थी एवं शोधार्थी को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है। इस पुस्तक में बड़े ही सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है।

-डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह